सादर प्रकाशनार्थ

बीकानेर में सूरि मंत्र साधना महामांगलिक के साथ संपन्न

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की सूरि मंत्र की द्वितीय पीठिका की साधना अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई। पीठिका की आराधना ता. 23 सितम्बर से प्रारंभ हुई। पीठिका की साधना श्री धनराजजी ढड्ढा के निवास पर की गई। ता. 8 को पूज्यश्री पीठिका साधना से बाहर पधारे। पीठिका की पूर्णाहुति पर महामांगलिक का भव्य आयोजन हुआ।

इस महामांगलिक के अवसर पर पूरे भारत से बडी संख्या में श्रद्धालु उमड पडे। उज्जैन, इन्दौर, बिजयनगर, भीलवाडा, ब्यावर, बाडमेर, बालोतरा, सिणधरी, चितलवाना, सांचोर, पूना, मुंबई, सूरत, अहमदाबाद, भिनाय, फतेहगढ, धनोप, देवलिया, जयपुर, जोधपुर, नागोर, नीमच, निम्बाहेडा, चित्तौड, उदयपुर, फलोदी, दिल्ली, कोलकाता आदि नगरों से बडी संख्या में लोगों का आगमन हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ 9 बजे हुआ जो दोपहर ढाई बजे तक चला। इतना लम्बा कार्यक्रम होने पर भी सभी लोगों की संपूर्ण उपस्थिति पूरे समय तक रही।

इस अवसर पर राजगृही वीरायतन से उपाध्याय श्री यशाजी म. श्री शिलापीजी म. श्री संप्रज्ञाजी म. श्री रोहिणीजी म. का विशेष रूप से पदार्पण हुआ। समारोह की अध्यक्षता राजस्थान राज्य के अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक श्री राजीवजी दासोत ने की। मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध उद्योगपति फोर्स कंपनी के डायरेक्टर डॉ. श्री अभयजी फिरोदिया थे। वीरायतन का ट्रस्ट मंडल, बीकानेर महापौर श्री नारायणजी चौपडा, सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री अशोकजी कटारिया नासिक, नीमच नगरपालिका अध्यक्ष श्री पप्पुजी जैन, श्री बाबुलालजी छाजेड आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने सूरिमंत्र की पांचों पीठिकाओं की व्याख्या की। साधना का रहस्य समझाते हुए मौन एवं एकाग्र जाप की महिमा समझाई। उन्होंने कहा– यह साधना आत्म कल्याण के साथ साथ श्री संघ की सर्वांगीण उन्नति के लक्ष्य से की जाती है। उन्होंने कहा– जीवन में समत्व की साधना अनिवार्य है। किसी की एक गलती पर आगबबूला होने की बजाय उसकी पूर्व की अन्य अच्छाईयों को याद करना चाहिये।

उन्होंने वीरायतन के संदर्भ में कहा– वीरायतन पूरे विश्व में शिक्षा व सेवा का जो अनूठा कार्य कर रहा है, उसकी जितनी अनुमोदना की जाय, कम है। पूरे विश्व में वीरायतन के आचार्य श्री चन्दनाजी और उनकी साध्वीजी ने हजारों लोगों को शाकाहारी बनाया है। उन्हें भगवान महावीर से परिचित कराया है। यह उनका बहुत बडा पुरूषार्थ है।

सभा का संचालन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा– गुरु सूर्य है, हम सब सूरजमुखी फूल है। उनकी दिशा ही हमारी दिशा है। उनका आदेश ही हमारा जीवन है।

पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ने अपने वक्तव्य में पूज्य गुरुदेव के प्रति समर्पण भाव अभिव्यक्त करते हुए गुरु–महिमा का वर्णन किया।

पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ने गुरुदेव के साथ हुए इस प्रथम चातुर्मास को अपने जीवन की अनूठी उपलब्धि व परम सौभाग्य बताया।

उपाध्याय यशाजी ने कहा– जीवन में गुरु अनिवार्य है। गुरु भगवंत मौन होकर भी मुखर होते हैं और उनका बोलना भी मौन है। उन्होंने कहा– आचार्य श्री चन्दनाजी आज यहाँ पधारने वाले थे पर स्वास्थ्य की प्रतिकूलता वश वे नहीं आ पाये, पर भावों से वे यहीं पर हैं।

साध्वी श्री शिलापीजी ने वीरायतन के उपक्रमों पर प्रकाश डाला। भगवान महावीर की विचरण भूमि बिहार प्रान्त में भगवान महावीर को कोई नहीं जानता। पर अब वीरायतन के उपक्रम से हजारों हजारों लोग पुनः भगवान महावीर के संदेशों से परिचित हुए हैं। उन्होंने विदेशों में वीरायतन द्वारा चल रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी।

डॉ. अभयजी फिरोदिया ने चिंतन प्रस्तुत करते हुए भगवान् महावीर के सिद्धान्तों को बहुत ही गहराई से समझने की प्रेरणा दी। जैन, धर्म, श्रमण आदि शब्दों की गहराई से चर्चा की। अपने विद्वत्तापूर्ण वक्तव्य में उन्होंने कहा– हम सभी को एक होकर भगवान महावीर के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना है और संपूर्ण विश्व तक पहुँचाना है। उन्होंने पूज्यश्री को साधना हेतु बधाई दी।

राजीवजी दासोत ने व्यावहारिक चिंतन प्रस्तुत करते हुए कहा– हमें पारम्परिक मूल्यों की सुरक्षा करते हुए आधुनिकता के साथ उसका कैसे समावेश करना है, यह चिंतन करना बहुत जरूरी है। उन्होंने पूज्यश्री के प्रति अपनी वंदनाएँ समर्पित करते हुए कहा– आपका आदेश मिला और मुझे इस विशिष्ट अवसर का लाभ मिला।

श्री खरतरगच्छ संघ के मंत्री श्री शांतिलालजी सुराणा ने पूज्यश्री की साधना को बीकानेर का सौभाग्य बताया। प्रारंभ में संगीत सम्राट् श्री मगनजी कोचर ने गुरु भक्ति गीतिका प्रस्तुत कर वातावरण को भक्ति के साथ उल्लासमय बना दिया।

पूज्यश्री की महामांगलिक से पूर्व गुरुपूजन किया गया। गुरुपूजन का लाभ बिजयनगर निवासी श्रीमती पारसकंवर उत्तमराजजी सिंघवी, पुत्र विनयराजजी योगेन्द्रजी सिंघवी परिवार ने लिया।

इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ बीकानेर द्वारा पधारे अतिथि गणों का बहुमान अभिनंदन किया गया। केयुप संदेश का विमोचन किया गया। पूज्यश्री ने विशिष्ट मंत्रोच्चारण–युक्त महामांगलिक पाठ सुनाया, जिसे श्रवण कर सभी ने परम धन्यता का अनुभव किया। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बीकानेर शाखा ने व्यवस्थाओं का उत्तरदायित्व बहुत ही व्यवस्थित रूप से निभाया। अतिथिगणों की साधर्मिक भक्ति का लाभ गुरुभक्त परिवार ने लिया।

अवंती तीर्थ उज्जैन की प्रतिष्ठा 18 फरवरी 2019 को

अतिप्राचीन चमत्कारी सुप्रसिद्ध महान् तीर्थ श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ, उज्जैन की प्रतिष्ठा आगामी चातुर्मास के पश्चात् वि. सं. 2075 माघ सुदि 14 ता. 18 फरवरी 2019 को संपन्न होगी।

उज्जैन में पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का भव्य चातुर्मास चल रहा है। उनकी पावन निश्रा में उज्जैन के समस्त श्री संघों की मीटींग हुई, जिसमें प्रतिष्ठा महोत्सव की विनंती करने के लिये बीकानेर जाने का तय किया गया। साथ ही प्रतिष्ठा महोत्सव समिति का गठन किया गया, जिसमें मध्यप्रदेश सरकार के उर्जा मंत्री श्री पारसजी जैन को चेयरमेन व संघवी कुशलजी गुलेच्छा बैंगलोर को संयोजक नियुक्त किया गया।

उज्जैन से प्रतिष्ठा महोत्सव की विनंती करने हेतु लगभग सवा सौ प्रतिनिधियों का संघ बीकानेर पहुँचा। इस प्रतिनिधि मंडल की विशेषता थी कि इसमें उज्जैन के मंदिरमार्गी, स्थानकवासी, तेरापंथी आदि समस्त संप्रदायों के आगेवान श्रावक सम्मिलित हुए।

उज्जैन श्री संघ की ओर से प्रतिष्ठा कराने की विनंती लेकर उज्जैन संघ बाजते गाजते पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सानिध्य में पहुँचा। श्री संघ की ओर से मुहूर्त्त उद्घोषणा के लाभार्थी श्री बाबूलालजी संजयजी, सुनील, पार्थ, निखिल नाहर परिवार ने पूज्यश्री से मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की।

पूज्यश्री ने उनकी विनंती को द्रव्य क्षेत्र काल भाव के आधार स्वीकार करते हुए मुहूर्त्त–पत्र श्री संजयजी नाहर को अर्पण किया। उन्होंने ज्योंहि मुहूर्त्त की उद्घोषणा की, सकल श्री संघ में परम आनंद व हर्ष की लहर उमड पडी।

यह ज्ञातव्य है कि अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ की पूर्व में आचार्य भगवंत श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरि ने प्रतिष्ठा की थी। उन्होंने कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना के द्वारा शिवलिंग में छिपी अवंती पार्श्वनाथ परमात्मा की प्राचीन चमत्कारी प्रतिमा प्रकट की थी। इस तीर्थ का जीर्णोद्धार पूज्य आचार्यश्री जिन

मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से चल रहा है। शास्त्र शुद्ध संपन्न हुए इस जीर्णोद्धार की यह विशेषता रही कि मूलनायक परमात्मा का उत्थापन नहीं किया गया। एक दिन भी पूजा अभिषेक बंद नहीं हुए। पिछले 11 वर्षों से चल रहे जीर्णोद्धार का यह कार्य अब पूर्णाहुति पर है। जो भी देखता है, देखता ही रह जाता है, ऐसा भव्य जिन मंदिर निर्मित हुआ है।

चातुर्मास की विनंतियाँ

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आगामी चातुर्मास हेतु इन्दौर जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ की ओर से एवं भीलवाडा श्री संघ की ओर से भावभीनी विनंती की गई। इन्दौर संघ की ओर से श्री डुंगरमलजी हुण्डिया ने विनंती की कि वर्षों से हमारी चातुर्मास की विनंती चल रही है। इस वर्ष चातुर्मास इन्दौर ही करना है। चातुर्मास के बाद उज्जैन की प्रतिष्ठा है। तो इस बार इन्दौर संघ को ही यह लाभ मिलना चाहिये। रामबाग दादावाडी का जीर्णोद्धार आपकी प्रेरणा से आपके ही मार्गदर्शन में हो रहा है। उसकी प्रतिष्ठा भी आपश्री के करकमलों द्वारा संपन्न कराना है। हमारी विनंती को स्वीकार करना है।

भीलवाडा संघ की ओर से परम गुरुभक्त श्री सुमित दुनीवाल ने विनंती करते हुए कहा– हमारा भीलवाडा संघ आपके चातुर्मास की प्यास लिये श्रीचरणों में उपस्थित हुआ है। भीलवाडा संघ के सभी संघ मिलकर आपश्री का चातुर्मास कराने का पूर्ण भाव रखता है।

पूज्यश्री ने फरमाया– हमारे समुदाय के नियमानुसार होली चातुर्मास के समय समुदाय के समस्त साधु साध्वियों के चातुर्मासों का निर्णय किया जायेगा। उस समय आप सभी की भावनाओं का ध्यान रखते हुए निर्णय किया जायेगा।

चातुर्मासों की घोषणा 12 मार्च को

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने घोषित किया है कि आगामी वि.सं. 2075 सन् 2018 के श्री सुखसागरजी महाराज के समुदाय के साधु साध्वियों के चातुर्मासों की घोषणा 12 मार्च 2018 चैत्र वदि 10 सोमवार को बिजयनगर में प्रतिष्ठा के अवसर पर की जायेगी।

अपने अपने क्षेत्र में चातुर्मास कराने के भाव रखने वाले समस्त संघों के प्रतिनिधि बिजयनगर पधारें। व्यवस्था हेतु बिजयनगर में इस नंबर पर संपर्क करें–

योगेन्द्रसिंह सिंघवी 9833433801

जीतेन्द्र मुणोत 94142 78980

बिजयनगर मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा 12 मार्च को

अजमेर जिले के बिजयनगर नगर में श्री नाकोडा पार्श्वनाथ भैरव पूर्णिमा मंडल के तत्वावधान में चल रहे श्री नाकोडा पार्श्वनाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा आगामी 12 मार्च 2018 को पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में संपन्न होगी।

इस मंदिर का निर्माण पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. की पावन प्रेरणा से संपन्न हुआ है।

बीकानेर में ता. 8 अक्टूबर को महामांगलिक के अवसर पर बिजयनगर से श्री संघ ने पूज्य गुरुदेव श्री से मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने शुभ मुहूर्त्त का पत्र अर्पण किया। शुभ मुहूर्त्त को प्राप्त कर सकल श्री संघ में हर्ष व आनंद का वातावरण छा गया।

बीकानेर में प्रतिष्ठा संपन्न

बीकानेर नगर के सुप्रसिद्ध अतिप्राचीन श्री चिंतामणि आदिनाथ जिन मंदिर, श्रेष्ठिवर्य श्री भांडाशाह द्वारा निर्मित श्री सुमतिनाथ मंदिर, श्री वासुपूज्य मंदिर एवं श्री कुंथुनाथ मंदिर में प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. आदि मुनिमंडल एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल के पावन सानिध्य में ता. 11 अक्टूबर 2017 बुधवार कार्तिक वदि 6 को आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव में तपागच्छीय पूज्य पंन्यास श्री पुण्डरीकरत्नविजयजी म. आदि साधु साध्वी मंडल एवं पार्श्वचन्द्रगच्छीय श्री पुण्यचन्द्रविजयजी म. का भी सानिध्य प्राप्त हुआ।

इस प्रतिष्ठा हेतु त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया।

श्री कुंथुनाथ मंदिर में ध्वजदंड प्रतिष्ठित किया गया। इस प्रतिष्ठा का लाभ बीकानेर हाल कम्पिल निवासी श्री विजयकुमारजी पुखराजजी डागा परिवार ने लिया। श्री वासुपूज्य मंदिर में श्री चंद्रप्रभस्वामी परमात्मा की प्राचीन प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई।

श्री चिंतामणि आदिनाथ मंदिर में मूल गर्भगृह में श्री संभवनाथ एवं श्री नमिनाथ जिन बिम्ब की पुनः प्रतिष्ठा की गई। इसके साथ ही रंगमंडप में 7 जिन प्रतिमाऐं, एक दादा गुरुदेव की प्रतिमा एवं गुरुदेवों के चार चरण बिराजमान किये गये।

चिंतामणि आदिनाथ परिसर स्थित श्री पार्श्वनाथ जिन मंदिर में ध्वजदंड प्रतिष्ठित किया गया। इन प्रतिष्ठाओं के पश्चात् शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जो सुमतिनाथ जिन मंदिर पहुँची। वहाँ प्रथम एवं द्वितीय तल पर आठ जिन बिम्ब पुनः प्रतिष्ठित किये गये। शिखर पर पाँच ध्वजदंड प्रतिष्ठित किये गये। मुख्य ध्वजा का लाभ श्री पुरखचंदजी दीपचंदजी नेमचंदजी शांतिलालजी अभयकुमारजी डागा परिवार ने लिया। विधि विधान हेतु शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी हरण गोवा निवासी पधारे।

ता. 12 को द्वारोद्घाटन के साथ समारोह संपन्न हुआ।

बाडमेर में जिन मंदिर दादावाडी बनेगी

बाडमेर नगर में श्री देवीबाई रावतमलजी धारीवाल परिवार द्वारा अर्पण किये गये भूखण्ड पर श्री बाबुलालजी संपतराजजी, नेमीचंदजी छाजेड परिवार की ओर से जिन मंदिर दादावाडी गुरु मंदिर का निर्माण होने जा रहा है। श्री बाबुलालजी छाजेड ने पूज्य गुरुदेवश्री से निवेदन किया कि जिन मंदिर दादावाडी का भूमिपूजन और खातमुहूर्त्त एवं शिलान्यास का शुभ मुहूर्त्त प्रदान करावें। साथ ही प्रतिष्ठा का भी शुभ मुहूर्त्त प्रदान करावें।

पूज्यश्री ने ता. 27.11.17 को भूमिपूजन, खात मुहूर्त्त का एवं ता. 29.11.17 को शिलान्यास का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। साथ ही 11 फरवरी 2018 का प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। इस जिन मंदिर का निर्माण पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से होने जा रहा है।

ब्यावर में प्रतिष्ठा 4 मार्च को

स्टेशन रोड पर स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिन मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव चैत्र वदि 3 रविवार ता. 4 मार्च 2018 को आयोजित होगा। इस मंदिर का निर्माण शा. धूलचंदजी कालूरामजी कांकरिया ट्रस्ट द्वारा

किया गया है। प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु श्री अतुलजी कांकरिया ने ब्यावर संघ के सदस्यों के साथ पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. से विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने 4 मार्च 2017 चैत्र वदि 3 रविवार का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। वर्तमान में इस मंदिर के ट्रस्टी श्री निहालचंदजी शांतिलालजी अतुलजी कांकरिया हैं, जो पूरी तन्मयता से जिन मंदिर की सुव्यवस्था देख रहे हैं।

पूज्यश्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 8 बीकानेर चातुर्मास के पश्चात् विहार कर बिकमपुर पधारेंगे। जहॉ उनकी पावन निश्रा में ता. 15 नवम्बर 2017 को महावीर स्वामी जिन मंदिर एवं मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाडी की प्रतिष्ठा होगी।

वहॉ से ता. 16 को विहार कर पुनः बीकानेर पधारेंगे। जहॉ ता. 26 नवम्बर को उनकी निश्रा में तुलसी विहार स्थित श्री पार्श्वनाथ मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

वहॉ से विहार कर नागोर, फलोदी होते हुए बालोतरा, सिणधरी पधारेंगे। वहॉ से नाकोडा, जसोल, सिवाना, मोकलसर होते हुए ता. 5 जनवरी 2018 को जहाज मंदिर मांडवला पधारेंगे। लगभग 10–12 दिनों की स्थिरता के पश्चात् विहार कर चितलवाना पधारेंगे। जहॉ संघवी लाधमलजी मावाजी मरडिया परिवार द्वारा निर्मित विद्यालय का उद्घाटन होगा।

वहॉ से पूज्यश्री सांचोर पधारेंगे। वहॉ श्री शांतिनाथ जिन मंदिर प्रतिष्ठा का रजत जयंती महोत्सव का कार्यक्रम संपन्न होगा। 25 वर्ष पहले पूज्यश्री की निश्रा में ही इस मंदिर का भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न होगा। त्रिदिवसीय यह समारोह 28 से 30 जनवरी 2019 तक चलेगा। ध्वजा समारोह 29 जनवरी को होगा।

वहॉ से पूज्यश्री चौहटन होते हुए बाडमेर की ओर विहार करेंगे, जहॉ पूज्यश्री की निश्रा में ता. 11 फरवरी को प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

वहॉ से विहार कर पूज्यश्री बालोतरा पधारेंगे, जहॉ 21 फरवरी को श्री केशरियानाथ जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहॉ से विहार कर पूज्यश्री नोरवा जिनकुशल हेम विहार धाम तीर्थ, पाली होते हुए ब्यावर पधारेंगे। वहॉ श्री चन्द्रप्रभ मंदिर की प्रतिष्ठा ता. 4 मार्च को करवाकर बिजयनगर की ओर विहार करेंगे, जहॉ 12 मार्च को अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न करवायेंगे। वहॉ से पूज्यश्री गुलाबपुरा, धनोप, देवलिया, सराणा, फतेहगढ, मालपुरा होते हुए जयपुर पधारेंगे, जहॉ 19 अप्रेल को मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा होगी। साथ ही 22 अप्रेल को मानसरोवर मंदिर की प्रतिष्ठा होगी। वहॉ से विहार कर पूज्यश्री अजमेर, बिजयनगर, भीलवाडा होते हुए चित्तौड पधारेंगे, जहॉ 6 मई को नाकोडा पार्श्वनाथ तलेटी मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा होगी। वहॉ से निम्बाहेडा प्रतिष्ठा करवाकर मंगलवाड चौराहा की प्रतिष्ठा 13 मई को करवायेंगे।

संपर्क सूत्र मुकेश प्रजापत– 79871 51421

मंगलवाड चौराहा प्रतिष्ठा 13 मई को

उदयपुर चित्तौड मुख्य मार्ग पर स्थित मंगलवाड चौराहा में नवनिर्मित जिन मंदिर की प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त्त पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने 13 मई प्रथम ज्येष्ठ वदि 6 रविवार का प्रदान किया।

मंगलवाड संघ की ओर से श्री शांतिलालजी मांडोत ने भावभीनी विनंती की। उन्होंने पूज्यश्री के प्रति अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करते हुए मुहूर्त्त प्रदान करने की विनंती की। इस मंदिर का निर्माण जैन श्वेताम्बर कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट, गज मंदिर द्वारा करवाया जा रहा है। यह प्रतिष्ठा पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में संपन्न होगी।

बालोतरा में अंजनशलाका महोत्सव 21 फरवरी 18 को

बालोतरा में श्री केसरियानाथ परमात्मा के जिन मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है। यह मंदिर बालोतरा के समस्त जैन अजैन समाज का श्रद्धा केन्द्र है। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ केसरियानाथ मंदिर ट्रस्ट की ओर से सकल श्री संघ ने बीकानेर आकर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. से अंजनशलाका प्रतिष्ठा की भावभीनी विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्य गुरुदेव श्री ने फाल्गुन सुदि 6 ता. 21 फरवरी 2018 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुहूर्त्त की उद्घोषणा होने पर सकल श्री संघ में परम आनंद व उल्लास का वातावरण छा गया। पूज्यश्री की निश्रा में जाजम का मुहूर्त्त 31 दिसम्बर 2017 को संपन्न होगा।

बीकानेर खरतरगच्छ संघ की ओर से अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चौपडा, मंत्री श्री जितेन्द्रजी चौपडा, खरतरगच्छ संघ अध्यक्ष श्री महावीरजी चौपडा आदि का बहुमान किया गया।

जयपुर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 19 अप्रेल को

जयपुर नगर में पूजनीया प्रवर्तिनीवर्या श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से कटला स्थित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर का जीर्णोद्धार श्री सुमति कुशल सज्जन सेवा ट्रस्ट द्वारा करवाया जा रहा है। इस मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा कराने हेतु ट्रस्टी श्री फतेचंदजी बरडिया, जयपुर खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी लोढा आदि प्रतिनिधि गण पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की सेवा में बीकानेर पधारे। उन्होंने पूज्यश्री से प्रतिष्ठा करवाने व मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने वैशाख सुदि 4 ता. 19 अप्रेल 2018 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

यह ज्ञातव्य है कि इस मंदिर का निर्माण पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. के सांसारिक परिवार द्वारा हुआ।

बीकानेर

चातुर्मास परिवर्तन श्रीमती आशादेवी नेमचंदजी खजांची के घर

बीकानेर नगर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 8 एवं पूजनीया साध्वी डॉ. श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 का ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्नता की ओर है। चार महिनों में पूज्यश्री के निरन्तर अमृत प्रवचन रहे। प्रवचनों में इतनी भीड पहली बार देखी गई। एक दिन भी प्रवचन बन्द नहीं रहा। रविवार के प्रवचनों का विशेष आयोजन रहा।

पूज्यश्री की निश्रा में पू. साध्वीजी म. की प्रेरणा से मेगा एक्जिबिशन लगा जो पूरे बीकानेर शहर द्वारा सराहा गया। तीन दिवसीय बच्चों का शिविर तो एक कीर्तिमान हो गया। नववर्ष के गौतम रास का आयोजन अपने आप में अनूठा रहा।

चातुर्मास परिवर्तन हेतु परम भक्त सुश्रावक श्री नेमचंदजी खजांची की धर्मपत्नी श्रीमती आशा देवी खजांची ने अपने निवास स्थान पर पदार्पण की विनंती की। जिसे पूज्य गुरुदेव श्री ने स्वीकार किया। पूज्यश्री ने फरमाया– बीकानेर में हमें दो विशिष्ट व्यक्तित्व सदा सदा याद आते हैं। एक हमारे प्रिय भाईजी श्री हरखचंदजी नाहटा और दूसरे श्री नेमचंदजी खजांची। आज से 28 वर्ष पहले बीकानेर में हमारा आना नेमचंदजी के कारण ही हुआ था। उस समय साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से उन्होंने उपधान तप का आयोजन करवाया था। वह उपधान गुरुदेवश्री के बाद पहला उपधान था।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन पूज्यश्री महावीर भवन से एवं साध्वी मंडल सुगनजी म. के उपासरे से विहार कर नेमचंदजी खजांची के घर पधारेंगे। वहीं पर प्रवचन आदि का आयोजन होगा।

आचार्य तुलसी का जन्म दिन
पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में मनाया गया

तेरापंथ संघ के निवेदन को स्वीकार कर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा गंगाशहर स्थित तेरापंथ समाधि स्थल पर पधारे, जहॉ उनकी पावन निश्रा में तेरापंथ धर्मसंघ के नवम आचार्य श्री तुलसी के जन्म दिन के उपलक्ष्य में समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर तेरापंथ धर्मसंघ के साधु साध्वीजी, केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री अर्जुनरामजी मेघवाल, बीकानेर महापौर श्री नारायणजी चौपडा आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया– संत सभी के होते हैं। संत किसी न किसी परम्परा में जीयेगा, पर उनका जीवन, उपदेश, आदर्श सभी के लिये हैं।

आचार्य तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को अनुशासन, मर्यादा आदि कई क्षेत्रों में नई उॅचाईयॉ दी। यह उनका पुण्य था कि उन्हें तेरापंथ जैसा अनुशासित धर्मसंघ मिला। और यह तेरापंथ धर्मसंघ का पुण्य था कि उन्हें आचार्य तुलसी जैसे अनुशास्ता मिले। इस अवसर पर पूज्यश्री ने कई संस्मरण सुनाये।

प्रेषक
जहाज मंदिर कार्यालय